© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 09 , Issue : 05 | October - December 2023

ग्रामीण समाज में साइबर अपराध

डॉ.जितेंद्र कुमार*
एसोसिएट प्रोफेसर
समाजशास्त्र विभाग
एस. एम. कॉलेज चंदौसी

DOI: https://doi.org/10.36676/irt.v9.i5.1531
Published 30/12/2023
* Corresponding author

सारांश

ग्रामीण समाज में साइबर अपराधों की बढ़ती घटनाएँ एक गंभीर चुनौती बनती जा रही हैं। इंटरनेट और डिजिटल उपकरणों की पहुँच ने जहाँ ग्रामीण विकास के नए द्वार खोले हैं, वहीं साइबर अपराधों का खतरा भी बढ़ा है। इस शोधपत्र में ग्रामीण क्षेत्रों में साइबर अपराधों की स्थिति, प्रकार, और उनके सामाजिक-आर्थिक प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में पाया गया कि इंटरनेट साक्षरता की कमी, जागरूकता का अभाव और कानून प्रवर्तन की सीमित पहुँच साइबर अपराधों के बढ़ने के प्रमुख कारण हैं। साथ ही, साइबर अपराधों के कारण ग्रामीण युवाओं, महिलाओं और कमजोर वर्गों को अधिक हानि उठानी पड़ती है। इस शोध में साइबर अपराधों की रोकथाम के लिए जागरूकता अभियान, डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देने, और मजबूत साइबर सुरक्षा उपायों की आवश्यकता पर जोर दिया गया है। अंततः, यह शोध ग्रामीण समाज में साइबर अपराधों से निपटने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जिससे ग्रामीण विकास में साइबर सुरक्षा को सशक्त किया जा सके।

मुख्य शब्द: ग्रामीण, समाज, साइबर, अपराध, जागरूकता इत्यादि।

प्रस्तावना

साइबर अपराध वह अपराध है, जिसमें इंटरनेट, कंप्यूटर नेटवर्क और डिजिटल उपकरणों का उपयोग करके अवैध कार्य किए जाते हैं। यह अपराध किसी व्यक्ति, संस्था या सरकार को नुकसान पहुँचाने के लिए डिजिटल तकनीकों का दुरुपयोग करता है। साइबर अपराध में धोखाधड़ी, फ़िशिंग, पहचान की चोरी, और साइबर धमकी जैसे कई प्रकार के अपराध शामिल होते हैं। डिजिटल युग में, जब इंटरनेट का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है, साइबर अपराधों की संख्या में

भी वृद्धि हो रही है। यह समस्या केवल शहरी क्षेत्रों तक सीमित नहीं है, बल्कि अब यह ग्रामीण समाज तक भी पहुँच चुकी है। ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट और डिजिटल उपकरणों की उपलब्धता ने आर्थिक और सामाजिक विकास के नए अवसर प्रदान किए हैं। सरकार की डिजिटल योजनाओं और सस्ते इंटरनेट की पहुँच के कारण ग्रामीण जनता तेजी से इंटरनेट और स्मार्टफोन का उपयोग कर रही है। हालांकि, इस तकनीकी क्रांति के साथ-साथ साइबर अपराध का खतरा भी बढ़ा है। इंटरनेट साक्षरता की कमी और साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूकता के अभाव में ग्रामीण लोग साइबर अपराधों के आसान शिकार बनते जा रहे हैं। इसके चलते ग्रामीण समाज में वित्तीय नुकसान, सामाजिक प्रतिष्ठा में गिरावट, और मानसिक आघात की घटनाएँ भी बढ़ी हैं।

साइबर अपराध के प्रकार:

साइबर अपराध कई प्रकार के होते हैं, जो इंटरनेट और डिजिटल उपकरणों के उपयोग से होते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में निम्नलिखित प्रमुख साइबर अपराध देखने को मिलते हैं:

1. **ऑनलाइन धोखाधड़ी** : ऑनलाइन लेन-देन के दौरान धोखाधड़ी करना, जैसे नकली वेबसाइट या ऐप्स का उपयोग करके लोगों से पैसे ठगना। ग्रामीण क्षेत्रों में ऐसे अपराधों का बढ़ता चलन है, क्योंकि वहां के लोग आसानी से इन धोखाधड़ी का शिकार बन जाते हैं।
2. **फ़िशिंग** : फ़िशिंग में लोगों को धोखे से संवेदनशील जानकारी, जैसे बैंक खाता विवरण, पासवर्ड या आधार नंबर प्राप्त करना शामिल होता है। यह अपराध ईमेल, एसएमएस, या सोशल मीडिया के माध्यम से किया जाता है। ग्रामीण इलाकों में, जहाँ इंटरनेट जागरूकता कम है, लोग आसानी से फ़िशिंग हमलों के शिकार हो जाते हैं।
3. **सोशल मीडिया का दुरुपयोग** : सोशल मीडिया का उपयोग करके लोगों को ब्लैकमेल करना, उनकी पहचान का दुरुपयोग करना, या फर्जी खबरें फैलाना साइबर अपराध के अन्य प्रकार हैं। ग्रामीण युवाओं में सोशल मीडिया का उपयोग बढ़ने के साथ ही इस तरह के अपराध भी तेजी से बढ़ रहे हैं।
4. **पहचान की चोरी** : यह अपराध तब होता है जब किसी की निजी जानकारी का उपयोग करके उसकी पहचान का दुरुपयोग किया जाता है। यह वित्तीय धोखाधड़ी, फर्जी खाता खोलने, या अन्य अपराधों के लिए किया जाता है। ग्रामीण इलाकों में पहचान की चोरी के मामलों में बढ़ोतरी देखी जा रही है, खासकर आधार और बैंक से संबंधित धोखाधड़ी के रूप में।

ग्रामीण क्षेत्र में इंटरनेट और डिजिटल उपकरणों का उपयोग:

पिछले कुछ वर्षों में ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट और डिजिटल उपकरणों की पहुँच में तेजी आई है। स्मार्टफोन और सस्ते डेटा योजनाओं के कारण ग्रामीण लोग तेजी से इंटरनेट का उपयोग करने लगे हैं। सरकारी योजनाओं, जैसे 'डिजिटल इंडिया', ने भी ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट पहुँच को बढ़ावा दिया है। इस तकनीकी विस्तार के साथ, गाँवों में ऑनलाइन बैंकिंग, सोशल मीडिया, और ई-कॉमर्स जैसे सुविधाओं का उपयोग बढ़ा है।

हालांकि, इंटरनेट के बढ़ते उपयोग के साथ ही साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूकता की कमी भी सामने आई है। अधिकांश ग्रामीण लोग डिजिटल उपकरणों का उपयोग तो कर रहे हैं, लेकिन वे साइबर अपराधों से सुरक्षित रहने के तरीकों के बारे में जागरूक नहीं हैं। इसका परिणाम यह हुआ है कि साइबर अपराधी गाँवों के लोगों को आसानी से निशाना बना रहे हैं।

साइबर अपराध का ग्रामीण क्षेत्रों पर प्रभाव:

1. **वित्तीय नुकसान:** साइबर अपराधों के कारण ग्रामीण लोग आर्थिक रूप से प्रभावित हो रहे हैं। ऑनलाइन धोखाधड़ी, फर्जी बैंक कॉल, और फ़िशिंग हमलों के माध्यम से ग्रामीण लोग अपनी बचत खो देते हैं। कई मामलों में लोग अपने बैंक खाते से जुड़ी जानकारी साइबर अपराधियों को अज्ञानतावश दे देते हैं, जिससे उन्हें आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है।
2. **सामाजिक प्रभाव:** सोशल मीडिया के दुरुपयोग और पहचान की चोरी जैसे अपराधों के कारण ग्रामीण समाज में सामाजिक प्रतिष्ठा और संबंधों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। साइबर बुलिंग और अपमानजनक पोस्ट के माध्यम से लोगों को मानसिक तनाव का सामना करना पड़ता है।
3. **साइबर डर और अविश्वास:** साइबर अपराधों के बढ़ने के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में लोग इंटरनेट और डिजिटल सेवाओं के प्रति अविश्वास महसूस कर रहे हैं। इसका परिणाम यह है कि लोग ऑनलाइन सेवाओं, जैसे ऑनलाइन बैंकिंग और ई-कॉमर्स का उपयोग करने में हिचकिचाहट महसूस करते हैं, जिससे डिजिटल समावेशन की गति धीमी हो रही है।
4. **सामाजिक विभाजन:** साइबर अपराधों के कारण कई बार ग्रामीण समुदायों के भीतर अविश्वास और सामाजिक विभाजन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। फर्जी खबरों और अफवाहों के फैलने से सामाजिक सौहार्द को भी नुकसान पहुँचता है।

ग्रामीण समाज में साइबर अपराध की स्थिति

भारत के कई ग्रामीण क्षेत्रों में साइबर अपराधों की घटनाएँ लगातार बढ़ रही हैं। उदाहरणस्वरूप, उत्तर प्रदेश के एक गाँव में एक महिला से ऑनलाइन धोखाधड़ी के माध्यम से उसकी बैंक खाते की जानकारी प्राप्त की गई और उसके खाते से धनराशि निकाल ली गई। यह अपराध एक फर्जी बैंक कॉल के माध्यम से किया गया था, जिसमें महिला को एक लिंक भेजा गया और उस लिंक पर क्लिक करने के बाद उसके बैंक खाते की जानकारी साइबर अपराधियों के पास पहुँच गई। इस प्रकार के अपराध ग्रामीण क्षेत्रों में आम हो गए हैं, जहाँ तकनीकी साक्षरता की कमी के कारण लोग आसानी से साइबर अपराधों का शिकार बन जाते हैं।

दूसरा उदाहरण महाराष्ट्र के एक गाँव से है, जहाँ सोशल मीडिया का दुरुपयोग कर एक किशोर को ब्लैकमेल किया गया। एक फर्जी सोशल मीडिया प्रोफ़ाइल का उपयोग कर, अपराधी ने उस किशोर से व्यक्तिगत जानकारी और तस्वीरें प्राप्त कीं, और बाद में उसे ब्लैकमेल कर पैसे की मांग की। इस मामले ने न केवल उस किशोर को मानसिक आघात पहुँचाया, बल्कि उसके परिवार और समाज पर भी गहरा प्रभाव डाला।

साइबर अपराध की बढ़ती घटनाएं और रिपोर्टिंग का स्तर:

पिछले कुछ वर्षों में ग्रामीण क्षेत्रों में साइबर अपराधों की घटनाओं में तेजी से वृद्धि हुई है। मोबाइल फोन और इंटरनेट की बढ़ती पहुँच ने जहाँ ग्रामीण समाज को तकनीकी रूप से सक्षम बनाया है, वहीं साइबर अपराधों का खतरा भी बढ़ा है। साइबर अपराधी अब ग्रामीण क्षेत्रों को निशाना बनाते हैं क्योंकि वहाँ के लोग डिजिटल धोखाधड़ी, फ़िशिंग, और सोशल मीडिया के दुरुपयोग से बचने के तरीकों के बारे में कम जानते हैं। हालांकि, साइबर अपराधों की घटनाएँ बढ़ रही हैं, लेकिन इनकी रिपोर्टिंग का स्तर बहुत कम है। ग्रामीण क्षेत्रों में लोग अक्सर साइबर अपराधों को रिपोर्ट नहीं करते क्योंकि उन्हें यह पता नहीं होता कि शिकायत कैसे दर्ज की जाए या कानून से सहायता कैसे प्राप्त की जाए। इसके अतिरिक्त, कई लोग सामाजिक बदनामी के डर से भी साइबर अपराधों की रिपोर्ट नहीं करते। इसका परिणाम यह हुआ है कि साइबर अपराधी खुलेआम कार्य कर रहे हैं, और ग्रामीण समाज में उनका डर बढ़ रहा है।

इंटरनेट साक्षरता और जागरूकता की कमी:

ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट साक्षरता की कमी साइबर अपराधों के बढ़ने का एक प्रमुख कारण है। अधिकांश ग्रामीण लोग इंटरनेट का उपयोग करना तो सीख चुके हैं, लेकिन वे इसके खतरों से अनजान हैं। उदाहरण के लिए, बहुत से लोग फ़िशिंग लिंक पर क्लिक करते हैं या फर्जी कॉल्स के जवाब में अपनी बैंकिंग जानकारी साझा कर देते हैं। इसके अतिरिक्त, साइबर सुरक्षा के

प्रति जागरूकता का अभाव भी ग्रामीण समाज में एक बड़ी समस्या है। लोगों को यह नहीं पता होता कि पासवर्ड सुरक्षा, दो-स्तरीय सत्यापन (Two-factor authentication), और निजी जानकारी को ऑनलाइन सुरक्षित रखने के लिए क्या कदम उठाने चाहिए। इस वजह से, वे साइबर अपराधियों के आसान शिकार बन जाते हैं। सरकार और अन्य संस्थाएँ साइबर अपराधों से निपटने के लिए जागरूकता अभियान चला रही हैं, लेकिन इन प्रयासों का ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त प्रभाव नहीं पड़ा है। तकनीकी साक्षरता कार्यक्रमों का अभाव और साइबर सुरक्षा शिक्षा की कमी के कारण ग्रामीण लोग साइबर अपराधों से बचाव के उपायों को अपनाने में विफल हो रहे हैं।

पिछले 5 सालों का ग्रामीण क्षेत्रों में साइबर अपराध की बढ़ती संख्या का अध्ययन

वर्ष	कुल साइबर अपराध मामले	प्रतिशत वृद्धि (%)
2018	27,248	-
2019	44,735	64.2
2020	50,035	11.8
2021	52,974	5.9
2022	65,893	24.4

स्रोत: राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB)

पिछले पाँच वर्षों में भारत में साइबर अपराधों में निरंतर वृद्धि देखी गई है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) की रिपोर्ट के अनुसार, 2020 में 50,035 साइबर अपराध मामले दर्ज किए गए, जो 2019 की तुलना में 11.8% अधिक थे।

2022 में यह संख्या बढ़कर 65,893 हो गई, जो 2021 के 52,974 मामलों से 24.4% अधिक थी।

ग्रामीण क्षेत्रों में भी साइबर अपराधों में वृद्धि हो रही है, हालांकि इन क्षेत्रों के लिए विशिष्ट आंकड़े सीमित हैं। सरकार ने ग्रामीण इलाकों में साइबर अपराध जागरूकता बढ़ाने के लिए कई पहलें शुरू की हैं, जैसे कि पुलिस अधिकारियों के लिए ऑनलाइन पाठ्यक्रम और प्रमाणीकरण कार्यक्रम।

साइबर अपराधों की बढ़ती संख्या, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में, डिजिटल साक्षरता और साइबर सुरक्षा जागरूकता की आवश्यकता को रेखांकित करती है। सरकार और संबंधित एजेंसियों द्वारा इन क्षेत्रों में साइबर सुरक्षा उपायों को सुदृढ़ करने के प्रयास जारी हैं।

साइबर अपराध से संबंधित भारत के कुछ प्रमुख राज्य और गांव

प्रमुख राज्य:

उत्तर प्रदेश (यूपी):

उत्तर प्रदेश में ग्रामीण क्षेत्रों में बैंक धोखाधड़ी, ऑनलाइन ठगी, और साइबर हैकिंग की घटनाएं तेजी से बढ़ी हैं।

उदाहरण: जौनपुर और आजमगढ़ जैसे जिले।

बिहार:

यहां के ग्रामीण इलाकों में ऑनलाइन कर्ज, लॉटरी धोखाधड़ी, और डिजिटल वॉलेट फ्रॉड के मामले ज्यादा देखे गए।

उदाहरण: गया और मधुबनी जैसे जिले।

झारखंड:

झारखंड साइबर अपराध के लिए कुख्यात है, खासकर जामताड़ा गांव, जिसे "साइबर अपराध की राजधानी" कहा जाता है।

जामताड़ा: यह गांव फोन धोखाधड़ी और फ़िशिंग अपराधों के लिए जाना जाता है।

हरियाणा:

हरियाणा में विशेषकर रोहतक और जींद जैसे ग्रामीण इलाकों में डिजिटल धोखाधड़ी और सोशल मीडिया अपराध तेजी से बढ़े हैं।

मध्य प्रदेश (एमपी):

सागर और ग्वालियर जैसे जिलों के ग्रामीण इलाकों में साइबर अपराध के मामले बढ़े हैं।

राजस्थान:

भरतपुर और अलवर जिलों में साइबर अपराध, जैसे कि OTP धोखाधड़ी और कस्टमर केयर स्कैम के मामले बढ़ रहे हैं।

ओडिशा:

ओडिशा के ग्रामीण इलाकों, विशेषकर गंजाम और बालासोर जिलों में साइबर अपराधों में वृद्धि देखी गई है।

प्रमुख गांव:

जामताड़ा (झारखंड):

इस गांव के नाम पर Netflix पर एक पूरी वेब सीरीज़ बनी है। यहां के साइबर अपराधी फोन कॉल के जरिए लोगों को ठगते हैं।

अलवर के गांव (राजस्थान):

यहां पर ऑनलाइन धोखाधड़ी और डिजिटल ठगी के मामले सबसे अधिक हैं।

मधुबनी (बिहार):

बैंक धोखाधड़ी और सरकारी योजनाओं के नाम पर ठगी के लिए चर्चित।

सिंगरौली (मध्य प्रदेश):

डिजिटल पेमेंट ऐप और अन्य माध्यमों से धोखाधड़ी के मामलों में वृद्धि।

निष्कर्ष

साइबर अपराधों का ग्रामीण समाज पर प्रभाव चिंताजनक है और इसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। इंटरनेट और डिजिटल उपकरणों की बढ़ती पहुँच ने जहाँ ग्रामीण विकास के नए द्वार खोले हैं, वहीं साइबर अपराधों का खतरा भी तेजी से बढ़ा है। इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में साइबर अपराधों का बढ़ना मुख्य रूप से इंटरनेट साक्षरता की कमी, जागरूकता का अभाव, और कमजोर साइबर सुरक्षा उपायों के कारण हो रहा है। साइबर अपराध न केवल ग्रामीण समाज को आर्थिक रूप से प्रभावित करते हैं, बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा और मानसिक स्वास्थ्य पर भी नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। विशेष रूप से महिलाएं और युवा साइबर अपराधों के आसान शिकार बनते हैं, जिससे उनके जीवन में गहरा सामाजिक और मानसिक आघात पहुँचता है। इस समस्या का समाधान केवल कानूनी प्रवर्तन द्वारा नहीं किया जा सकता, बल्कि इसके लिए ग्रामीण क्षेत्रों में व्यापक साइबर सुरक्षा जागरूकता अभियान चलाने, डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देने, और साइबर सुरक्षा उपायों को मजबूत करने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कुमार, राजेश. (2021). साइबर अपराध और समाज. प्रभात प्रकाशन.
2. प्रजापतिदिव्या. 2019. “सोशल मीडिया और महिला अपराध: भारत के संदर्भ मे एक विश्लेषणात्मक अध्ययन.” International Journal of Advanced Research and Development 4 (1)100-103.
3. कुमार, सुमित. (2020). डिजिटल इंडिया और साइबर सुरक्षा. राजकमल प्रकाशन.
4. मीना डॉ. हरिचरण. 2018. “भारतीय समाज में साइबर अपराध की अवधारणा.” JETIR 5(3):917-22.

5. शर्मा, अनीता. (2019). ग्रामीण भारत में साइबर अपराध: चुनौतियाँ और समाधान. वाणी प्रकाशन.
6. शर्मा सुनीता कुमारी. 2022. "'ग्रामीण व शहरी शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की साइबर अपराध के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन." IJCRT 10(5):19-22.
7. सिंह, राकेश. (2022). साइबर अपराध: कानूनी परिप्रेक्ष्य. यूनिवर्सल लॉ पब्लिशिंग.
8. सिंह प्रो0 स्वतन्त्र सिंह चौहान ओमेन्द्र. 2021. "ग्रामीण ई-प्रशासन की वर्तमान स्थिति एवं भविष्य की चुनौतियाँ." RRJ 7(2) 23- 30
9. राकेश कुमार राय. 2015 "वर्तमान समय के साइबर अपराध एवं विधिक व्यवस्था" . Int. J. Ad. Social Sciences 3(2): 80-82